وَقَالَت طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ ءَامِنُواْ بِٱلَّذِىٓ أُنزِلَ عَلَى
ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَجْهَ ٱلنَّهَارِ وَٱكْفُرُوٓاْ ءَاخِرَهُۥ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوٓاْ إِلَّا لِمَن تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ ٱلْهُدَىٰ
هُدَى ٱللَّهِ أَن يُؤْتَىٰٓ أَحَدٌ مِّثْلَ مَآ أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَآجُّوكُمْ عِندَ
رَبِّكُمْ ۗ قُلْ إِنَّ ٱلْفَضْلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ ۗ وَٱللَّهُ
وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِۦ مَن يَشَآءُ ۗ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ
ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾ * وَمِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ مَنْ إِن تَأْمَنْهُ بِقِنطَارٍ
يُؤَدِّهِۦٓ إِلَيْكَ وَمِنْهُم مَّنْ إِن تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لَّا يُؤَدِّهِۦٓ إِلَيْكَ إِلَّا
مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُواْ لَيْسَ عَلَيْنَا فِى
ٱلْأُمِّيِّـۧنَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾
بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِۦ وَٱتَّقَىٰ فَإِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾ إِنَّ
ٱلَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ ٱللَّهِ وَأَيْمَٰنِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُوْلَٰٓئِكَ لَا
خَلَٰقَ لَهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ ٱللَّهُ وَلَا يَنظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ
ٱلْقِيَٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾ وَإِنَّ مِنْهُمْ
لَفَرِيقًا يَلْوُۥنَ أَلْسِنَتَهُم بِٱلْكِتَٰبِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ
وَمَا هُوَ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ وَمَا هُوَ
مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ۖ وَيَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾
مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ ٱللَّهُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحُكْمَ وَٱلنُّبُوَّةَ ثُمَّ
يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُواْ عِبَادًا لِّى مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلَٰكِن كُونُواْ

رَبَّنِيّۧنَ بِمَا كُنتُمۡ تُعَلِّمُونَ ٱلۡكِتَٰبَ وَبِمَا كُنتُمۡ
تَدۡرُسُونَ ٧٩ وَلَا يَأۡمُرَكُمۡ أَن تَتَّخِذُواْ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةَ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ
أَرۡبَابًاۚ أَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡكُفۡرِ بَعۡدَ إِذۡ أَنتُم مُّسۡلِمُونَ ٨٠

Theme	
Hypocrites among Jews and Christians. Among the Jews and Christians there are some good people and some bad. There are some Jews and Christians who cheat in quoting their Holy Books. Isa (Jesus) never asked to worship him instead of Allah.	यहूद व नसारा में मुनाफ़िक़ लोग। यहूद व नसारा में कुछ नेक लोग हैं और कुछ बुरे। बाज़ यहूद व नसारा अपनी मुक़द्दस किताबों के हवाले देने में तहरीफ़ और धोका-दही से काम लेते हैं। ईसाؑ ने कभी यह नहीं कहा कि अल्लाह के बजाए उनकी इबादत की जाए।
Tarjumani	
Some of the People of the Book say to one another: "Believe in what is revealed to the believers (Muslims) in the morning and deny it in the evening, so that they (the Muslims) may follow suit and abandon their faith. not believe anyone except the one who follows your own religion." O Muhammad, tell them: "The only true guidance is the guidance of Allah." These	अहले-किताब में से एक गरोह कहता है कि इस नबी के माननेवालों पर जो कुछ नाज़िल हुआ है उसपर सुबह ईमान लाओ और शाम को उससे इनकार कर दो, शायद इस तरकीब से ये लोग अपने ईमान से फिर जाएँ	नीज़ ये लोग आपस में कहते हैं कि अपने मज़हबवाले के सिवा किसी की बात न मानो	ऐ नबी, इनसे कह दो कि "अस्ल में हिदायत तो अल्लाह की हिदायत है और यह उसी की देन है कि किसी को वही कुछ दे दिया जाए

people of the Book do not believe that revelation could be sent to anyone besides themselves, like that which has been sent to you, or that they will ever argue with you in the presence of your Rabb. Tell them: "Surely, grace is in the hands of Allah: He bestows it on whom He pleases, Allah is All-Sufficient for His creatures needs and is All-Knowing. He chooses for His mercy whom He pleases, Allah is the Owner of mighty grace. Among the People of the Book there are some, who, if you trust them with a heap of gold, will readily return it back, and there are others, who, if you trust them with a single dinaar (silver coin), will not return it back unless you constantly keep on demanding; because they say, "We are not going to be called to account for our behavior with the illiterates (non Jews)." Thus they deliberately ascribe a lie to Allah knowing well that He never permitted such	जो कभी तुमको दिया गया था	या यह कि दूसरों को तुम्हारे रब के हुज़ूर पेश करने के लिए तुम्हारे खिलाफ़ कवी हुज्ज़त मिल जाए |" ऐ नबी, उनसे कहो कि "फज्ल व शरफ़ अल्लाह के इखतियार में है, जिसे चाहे अता फरमाए	वह वसीउन्नजर है और सब कुछ जानता है, अपनी रहमत के लिए जिसको चाहता है मखसूस कर लेता है और उसका फज्ल बहुत बड़ा है	अहले-किताब में कोई तो ऐसा है कि अगर तुम उसके एतिमाद पर माल व दौलत का एक ढेर भी दे दो तो वह तुम्हारा माल तुम्हें अदा कर देगा, और किसी का हाल यह है कि अगर तुम एक दीनार के मामले में भी उसपर भरोसा करो तो वह अदा न करेगा, इल्हा यह कि तुम उसके सर पर सवार हो जाओ	उनकी इस अखलाकी हालत का सबब यह है कि वे कहते हैं "उम्मियों (गैर-यहूदी लोगों) के मामले में हमपर कोई मुवाखज़ा नहीं है |" और यह बात महज़ झूठ घड़कर अल्लाह की तरफ़ मंसूब करते हैं, हालाँकि उन्हें मालूम है (कि अल्लाह ने ऐसी कोई बात नहीं फ़रमाई है) आख़िर क्यों उनसे बाज़पुर्स न होगी? जो भी अपने अहद को पूरा करेगा और बुराई से

wrongdoing. Yes! Those who keep their promise and guard themselves against evil are His beloved, for Allah loves only those who guard them-selves against evils. In fact, those who sell the covenants of Allah and their own oaths for a petty price, shall have no portion in the hereafter. Allah will neither speak to them nor even look at them nor cleanse them from their sins on the Day of Judgment. They shall have painful punishment. There are some among them who twist their tongues pretending a quote from their Holy Book; so that you may think that what they read is a part of the Book, whereas, in fact, it is not a part of the Book. They also assert, "It is from Allah" whereas, in fact, it is not from Allah. Thus they deliberately ascribe a lie to Allah. It is not possible for a man whom Allah has given the Book, the authority and the Prophet-hood, that he would say to the people: "Worship me instead of Allah." On the	बचकर रहेगा | वह अल्लाह का महबूब बनेगा, क्योंकि परहेजगार लोग अल्लाह पसन्द हैं | रहे वे लोग जो अल्लाह के अहद और अपनी कसमों को थोड़ी कीमत पर बेच डालते हैं, तो उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, अल्लाह कियामत के रोज़ न उनसे बात करेगा न उनकी तरफ़ देखेगा, और न उन्हें पाक करेगा, बल्कि उनके लिए तो सख्त दर्दनाक सज़ा है | उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो किताब पढ़ते हुए इस तरह ज़बान उलट-फेर करते है कि तुम समझो जो कुछ वे पढ़ रहे हैं वह किताब ही कि इबारत है, हालाँकि वह किताब की इबारत नहीं होती | वे कहते हैं कि जो कुछ हम पढ़ रहे हैं यह ख़ुदा की तरफ़ से है, हालाँकि वह ख़ुदा की तरफ़ से नहीं होता, वे जान-बुझकर झूठ बात अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर देते हैं | किसी इनसान का यह काम नहीं है कि अल्लाह तो उसको किताब और हुक्म और नुबूवत अता फरमाए और वह लोगों से कहे कि अल्लाह के बजाए तुम मेरे बन्दे बन जाओ | वह तो यही कहेगा कि सच्चे रब्बानी बनो जैसा कि उस किताब की तालीम का तकाज़ा है जिसे तुम पढ़ते और पढ़ाते हो | वह

contrary he would say: "Be pious scholars of the Rabb in accordance with the Holy Book you have been teaching and reading." He would never ask you to take angels and prophets as your lords. Would he ask you to disbelieve after you have become Muslims (believers)?	तुमसे हरगिज़ यह न कहेगा कि फरिश्तों को या पैगम्बरों को अपना रब बना लो	क्या यह मुमकिन है कि एक नबी तुम्हें कुफ़्र का हुक्म दे ज़बकि तुम मुसलिम हो	
Tafsir	